Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(4), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

गांधी दर्शन : विविध आयाम

दत्ता कोल्हारे
पता : ए-4, संजय नगर (जिन्सी),
औरंगाबाद 431001
महाराष्ट्र
dattafan@gmail.com

विश्व के अन्य देशों केस्वतंत्रता संग्राम पर अगर हम नजर डालते है तो यह दिखाई देता है कि दुनिया के जिन नेताओं ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, बाद में उन्होंने हीदेश की बागड़ोर अपने हाथों में रखकर अपने देश का संचलन किया।उन्होंने ही सर्वोच्च पद पर विराजमान होकर राष्ट्र का नेतृत्व किया। जॉर्ज वाशिंगटन से लेकर नेल्सन मंडेला तक इस बात के उदाहरण है।परन्तु गांधी एक ऐसे नेता थे जो आजादी के बाद 'सत्ता की राजनीति' का हिस्सा नहीं बने। वे ऐसे जन-नायक थे जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन जनता की सेवा में बिताया। आजादी के बाद उन्होंने न केवल आम लोगों की मूलभूत समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया, बल्कि उन्हें संगठित कर स्वावलंबी भी बनाया।गांधी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने मानवाधिकार की बात कही। महात्मा गांधी जिन्हें हम प्रेम से 'बापू' कहकर पुकारते है, भारत की राजनीति में उनका योगदान अतुलनीय है। राजनीति के अलावा सामाजिक, शैक्षिक क्षेत्र में भी उनका कार्य प्रशंसनीय है। बापू ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपने हाथों में खड़ग और ढाल लिए बिना ही अंग्रजों की दासता से देश को आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'दे दी हमें आजादी बिना खड़ग बिना ढाल, साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल' यह काव्य पंक्तियां गांधी जैसे संत प्रवृत्ति के व्यक्तित्व का सही-सही बखान करती है। गांधी ने सभी सुख-सुविधाओं का परित्याग कर देश की आजादी को ही सर्वोपरी माना।

गांधी पर अब तक हजारों पुस्तकें लिखी गई। उनके संबंध में अलग-अलग तरह की बातें देश-दुनिया में प्रचलित है। कुछ बातें उनके सन्दर्भ में सकारात्मक पहलुओं पर प्रकाश डालती है, तो कुछ नकारात्मक पक्ष को भी उजागर करती है।आज गांधी को समझने एवं माननेवाले व्यक्ति बहुत ही कम मात्रा में दिखाई देते है।गांधी की याद हमें 15 अगस्त, 26 जनवरी या 2 अक्तूबर को ही आती है। गांधी की प्रतिमा सरकारी कार्यालयों के दीवारों की शोभा बढ़ा रही है। आजादी के जश्न में गांधी की वेशभूषा परिधान किए विद्यार्थी को गांधी समझ कर सारे लोगउनकी जय-जयकार करते है। परन्तु जब गांधी को आचरण में उतारने की बात आती है, तब सब पीछे हट जाते है। गांधी की मृत्यु के बाद आज की पीढ़ी उन्हें-उनके विचारों को लगभग भूल-सी गई है।इक्का-दुक्का फिल्मों में गांधी के विचारों

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(4), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

को 'गांधीगिरी' के रूप में फैशन नाम पर परोसा जा रहा है।आज लोगों को गांधी नोटों पर छपे हुए ही अच्छे लगते है।परन्तु गांधी दर्शन को कोई भी अपनी दिनचर्या में स्वीकारना नहीं चाहता। इसके पीछे क्या कारण हो सकता है? उत्तर हैं - गांधी की विचार-सिद्धांत पढ़ने-सुनने में भले ही अच्छे लगते हो परन्तु उन्हें आचरण में लाना उतना ही कठिन है।गांधी द्वारा प्रतिपादित सत्य, अहिंसा, ब्रम्हचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, प्रार्थना, स्वास्थ्य आदि सिद्धांतों का पालन करना हर किसी के बस की बात नहीं है। इसकारण गांधी से लोग कोसों दूर भागते नजर आते है।

'गांधी' किसी एक व्यक्ति का नाम नहीं है। गांधी एक विचारधारा है, एक सिद्धांत है, एक जीवन शैली है।'मोहनदास करमचंद गांधी' एक व्यक्ति है। परन्तु 'गांधी' से 'महात्मा' बनना कोई आसान काम नहीं है। जिस तरह सोने को शुद्ध करने एवं चमकाने के लिए आग की भट्टी में तप कर बाहर निकालना पड़ता है, उसी तरह 'गांधी' से 'महात्मा' बनने के सफर में गांधी को अपने जीवन की आहुति तक देनी पड़ी।वास्तविक रूप में गांधी हमें दक्षिण अफ्रीका में मिलें। यह महज एक संयोग था कि बैरिस्टर बनने के बाद वे दक्षिण अफ्रीका में अपने किसी परिचित की वकालत करने के लिए पहुंचे। उनके पास रेल के सफ़र का प्रथम श्रेणी का तिकट होकर भी भारतीय अर्थात 'काले रंग' का होने के कारण उन्हें प्रथम श्रेणी के बजाय तृतीय श्रेणी में बैठने को कहा गया। विरोध करने पर उन्हें ट्रेन से बाहर फेक दिया गया। इस घटना से प्रभावित होकर उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में काले-गोरे का भेद एवं भारतीय निवासियों के अधिकारों के लिए आन्दोलन किए।भारतीयों के प्रति इस भेदभावपूर्ण एवं अमानवीय व्यवहार के विरुद्ध अहिंसक आंदोलन से 'सत्याग्रह' नामक अस्त्र की व्युत्पत्ति हुई।जिसे उन्होंने अपने देश की आजादी में अंग्रेजों की खिलाफ प्रभावी ढंग से प्रयोग में लाया।दक्षिण अफ्रीका में गांधी के आंदोलन की सफलता यह थी कि उन्होंने वहां बिखरे लोगों को एकत्रित कर अपने मूलभूत अधिकारों एवं हक़ के प्रति जागरूक किया।समानता एवं मानवाधिकार की बात गांधी ने यहाँ इस आन्दोलन से प्रतिपादित की।

गांधी धर्म की नैतिकता को राजनीति में लाना चाहते थे। इसलिए वे लोगों को धार्मिक भाषा में समझाते। क्योंकि भारतीय धर्म की भाषा समझते हैं। भारतीय, जो आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था से परिचित नहीं थे, राजनीति से दूर हो गए थे। गांधी ने उन्हें राजनीति में आकर्षित करने के लिए एक धार्मिक अपील की। उन्होंने हिंदुओं को एकजुट करने के लिए 'राम-राज्य' के विचार का इस्तेमाल किया। राम-राज्य की अवधारणा के माध्यम से, लोग गांधी को देखने लगे। गांधी ने मुसलमानों को एकजुट करने के लिए 'खिलाफत आंदोलन' का इस्तेमाल किया। गांधी के प्रभाव के कारण, हिंदू और

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(4), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

मुस्लिम एक-दूसरे के धर्म का सम्मान करने लगे। खिलाफत आंदोलन के दौरानमुसलमानों ने मांस नहीं खाया और न ही हिंदुओं को चोट पहुंचाई। रौलट कानून के खिलाफ गांधी के नेतृत्व वाला आंदोलन सार्वभौमिक उपवास और समुद्र स्नान के दिन से शुरू हुआ। गांधी ने घोषणा की कि यह उपवास चौबीस घंटे से अधिक-का नहीं होगा।गांधी ने धार्मिक हिंदुओं और मुसलमानों को राष्ट्रीय आंदोलन में लाने के लिए धर्म का इस्तेमाल किया। धर्म का राजनीति में या राजनीति में धर्म का सही इस्तेमाल किस तरह से करना चाहिए यह बात हमें गांधी दर्शन से सिखने को मिलती है।

गांधी दर्शन में सबसे महत्वपूर्ण कोई सिद्धांत होगा तो वो है - सत्य एवं अहिंसा। इसी बात को अगर 'सत्य और अहिंसा का दूसरा नाम गांधी है' इस तरह से कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होनी चाहिए। क्योंकि गांधी हमेशा सत्य के मार्ग पर ही चलते रहे।गांधी सही मायने में 'सत्याग्रही' थे। सत्याग्रही अर्थात - सदैव सत्य का आग्रह धरनेवाला।कहा जाता है कि अपने आचरण में सत्य को लाने की प्रेरणा उन्हें 'सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र' फिल्म से मिली। सत्य के इस काँटों से भरे मार्ग पर चलना कोई आसन काम नहीं होता। परन्तु सत्य के मार्ग में अनेक रुकावटें आने के बावजूद भी वे अडिग रहे। उन्होंने 'सत्य को ही भगवान' माना है। गांधी ने अपने जीवन में 'सत्य' को महत्व दिया। 'सत्य के प्रयोग' नामक उनकी आत्मकथा इस बात का प्रमाण है।

दक्षिण अफ्रीका के 'काले-गोरे भेद' से शुरू हुआ उनका राजनैतिक सफर भारत को आजादी मिलने के बाद भी अपनी अंतिम साँस तक निरंतर जारी था। गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम में अपनाये गए सत्य, अहिंसा एवं असहकार जैसे शस्त्रों से अंग्रेज़ी सरकार को झुकना पड़ा।देश की आजादी में गांधी का योगदान अविस्मरणीय है, उसे कभी-भी भुलाया नहीं जा सकता।

राजनैतिक विचारधारा के अलावा गांधी का शिक्षा के क्षेत्र में भी विशेष योगदान रहा।वे शोषण रहित समाज का निर्माण करना चाहते थे। अपने इस सपने को साकार करने के लिए उन्होंने शिक्षा को माध्यम के रूप में चुना। उनका मानना था कि शिक्षा के अभाव में स्वस्थ्य समाज का निर्माण असंभव है। वे शिक्षा को 'एक ब्यूटीफुल ट्री' कहते थे। मातृभाषा में ही शिक्षा होनी चाहिए, इस बात का उन्होंने पुरस्कार किया।

गांधी का मानना था कि देश का हर व्यक्ति विशेषत: ग्रामीण क्षेत्र का व्यक्ति स्वावलंबी बने। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन्होंने अनेक प्रयास किये। जिनमें कुटीर उद्योग एक महत्वपूर्ण है। ग्रामीण लोगों की उन्नति हो, उन्हें स्वयं-रोजगार मिलने की दिशा में उनके द्वारा उठाया गया एक महत्वपूर्ण

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(4), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

कदम था। जिसके द्वारा परंपरागत कुटीर पुनर्जीवित हो उठा। चरखा चलाना, उसपर सूत कातना इनमें से ही एक है।

गांधी दर्शन का प्रमुख सूत्र है - ईश्वर, पर्यावरण और मनुष्यमात्र पर प्रेम करना। हम गांधी की इस विचार का मूल सार भूलकर ईश्वर के अलग-अलग नामों के आधार पर, अलग-अलग गुट-समुदाय बनाकर आपस में ही लड़-झगड़ रहे है। प्रकृति से सब कुछ छीन कर, उसके बदले में उसे कुछ भी न लौटाकर पर्यावरण संतुलन बिगाड़ रहे है। धर्म, जाति, पंथ तथा प्रान्त आदि में दिनोंदिन शत्रुता बढ़ रही है। यह सब समाज के लिए हानिकारक है, यह मालूम होते हुए भी हम कुछ नहीं कर पा रहे है। इन बातों से बचने के लिए गांधी के विचार सहायक साबित हो सकते है।

'ग्राम स्वराज' के संदर्भ में गांधी के विचार आज भी प्रासंगिक है। गांधीजी कहते थे कि,"जब मैं ग्राम स्वराज्य की बात करता हूं तो मेरा आशय आज के गांवों से नहीं होता। आज के गांवों में तो आलस्य और जड़ता है। फूहड़पन है। गांवों के लोगों में आज जीवन दिखाई नहीं देता। उनमें न आशा है, न उमंग। भूख धीरे-धीरे उनके प्राणों को चूस रही है। कर्ज से कमर तोड़बोझ से वे दबे हैं। मैं जिस देहात की कल्पना करता हूं, वह देहात जड़ नहीं होगा। वह शुद्ध चैतन्य होगा। वह गंदगी में और अंधेरे में जानवर की जिंदगी नहीं जिएगा। वहां न हैजा होगा, न प्लेग होगा, न चेचक होगी। वहां कोई आलस्य में नहीं रह सकता। न ही कोई ऐश-आराम में रह पायेगा। सबको शारीरिक मेहनत करनी होगी। मर्द और औरत दोनों आजादी से रहेंगे।"**गांधी के सपनों का गाँव स्वस्थ एवं स्व-पूर्ण है।** अपने इस सपने को पूर्ण करने के लिए उन्होंने 'गाँव की ओर चलो' ऐसा नारा तक दिया। उन्होंने प्रथमत: गाँवों को स्व-निर्भर बनाने पर जोर दिया। उन्हें लगता था कि गाँवों में उनकी जरूरत एवं आवश्यकताओं की पूर्ति हो। इसलिए गाँवों को आत्मनिर्भर बनाने की उन्होंने कोशिश की। उनका यह भी मानना था कि सच्चा भारत शहरों में नहीं गाँवों में निवास करता है। गाँवों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए है 'ग्राम स्वराज' का सिध्दांत प्रस्तुत किया।

समारोप :

सत्य और अहिंसा के पुजारी गांधी केवल भारत में ही नहीं विश्वभर के श्रध्दा स्थान है। गांधी की स्मृति के हम 150 वर्ष माना रहे है। इतने वर्षों बाद भी गांधी आज सामान्य व्यक्ति के साथ-साथ विद्वानों के हृदयपटल पर राज कर रहे है। गांधी को हमने सिर्फ फोटो फ्रेम में या पुतले की भीतर ही सीमित कर रखा है। उसके अलावा लोग गांधी के नाम का अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करते है,

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(4), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

इन आरोपों में कुछ मात्रा में सत्यता होने के बाद भी हम गांधी को कदापि भूल नहीं सकते। समझदारी के बिना ज्ञान, शील रहित शिक्षण, विवेक रहित सुख, त्याग रहित धर्म, बिना कष्ट किए संपत्ति, नीति रहित व्यापार और तत्वविहीन राजनीति इन सात दुर्गुणों की चर्चा गांधी ने की थी। यह हमारी बदकिस्मती है की आज समाज में इन्हीं सात दुर्गुणों का चलन बढ़ रहा है। इसीकारण गांधी दर्शन-विचारों की जरुरत है। उनके सिध्दांत-विचार हमें कठिन परिस्थिति से मार्ग दिखाने में सदैव मार्गदर्शक साबित होंगे।

संदर्भ :

1.बिपनचंद्र और अन्य, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, दिल्ली, 1990

2.नलिनी पंडित, गांधी, मुंबई 1983

3.चंद्रशेखर धर्माधिकारी, गांधी की खोज, मुंबई 2006

4. लोकराज्य (मासिक), महाराष्ट्र शासन, ऑक्टोबर 2019